आभार : धाद महिला मंच के आयोजन में विचार व्यक्त करती लेखिका अर्चना पैन्यूली। फोटो : अमर उजाला

धाद ने अप्रवासी अर्चना पैन्यूली का सम्मान किया

अमर उजाला प्रतिनिधि

उपन्यास परिवर्तन पर चरचा की गई

देहरादून। धाद महिला संस्था के तत्वावधान में आयोजित एक कार्यक्रम में डेनमार्क निवासी अप्रवासी भारतीय लेखिका अर्चना पैन्यूली को सम्मानित किया गया। इस अवसर पर पर्वतीय पृष्ठ भूमि पर लिखे गए उनके हिंदी उपन्यास परिवर्तन पर साहित्यकारों ने चर्चा की।

चकराता रोड स्थित इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नोलॉजी एंड मैनेजमैंट परिसर में हुए समारोह में अर्चना पैन्यूली के उपन्यास परिवर्तन पर टिप्पणी करते हुए समारोह के अध्यक्ष प्रसिद्ध कवि लीलाधर जगूड़ी ने कहा कि यह कृति डेनमार्क में रह कर अपने क्षेत्र की चिंता से उपजा है। वरिष्ठ कवि व पत्रकार चारुचंद्र चंदोला ने कहा कि परिवर्तन पीढ़ियां बीत जाने के बाद उनके विचारों में आने वाले परिवर्तन को दर्ज करता है। यह गढ़वाल के लोगों की विडंबनाओं का दस्तावेज है।

कवयित्री वीणापाणी जोशी ने कहा कि उपन्यास पढ़कर ऐसा महसूस नहीं होता कि यह उस व्यक्ति ने लिखा है जिसने गढ़वाल कभी नहीं देखा। प्रेमबल्लभ बहुगुणा ने कहा कि उपन्यास जहां पहाड़ से युवाओं के पलायन की समस्या पर टिप्पणी करता है वहीं अनमेल विवाह जैसी कुप्रथाओं पर भी कुठाराघात करता है। यह दिखाता है कि समय के साथ जो पहले अस्वीकार्य था समाज उसे स्वीकार करने लगता है। लेखिका अर्चना पैन्यूली ने कहा कि यद्यपि उन्हें गढ़वाल से सीधे परिचय का कोई खास अवसर नहीं प्राप्त हुआ पर समाज को जानने को उनके परिवारिक मित्रों तथा राहुल सांकृत्यायन की पुस्तकों की बहुत सहायता मिली। इसी जानकारी की बदौलत वह उत्तराखंड के जीवन पर प्रामाणिकता के साथ उपन्यास लिखने की हिम्मत जुटा सकीं। मुख्य अतिथि गढ़वाल विश्वविद्यालय की पूर्व उपकुलपति सुशीला डोभाल ने अर्चना पैन्यूली का स्वागत किया और लेखिका को भारत से दूर रहते हुए भी हिंदी उपन्यास लिखने के लिए बधाई दी।

कार्यक्रम के दौरान विमला रावत ने नरेंद्र सिंह नेगी का एक गीत डांड्यूं कांठ्यूं का मुलुक जैल्यू सुनाया। इसके पहले कुसुम नौटियाल ने अर्चना पैन्यूली का परिचय दिया। कार्यक्रम का संचालन जगदीश बावला ने किया। इस दौरान टीवी फिल्म प्रोड्यूसर शिव पैन्यूली, आईटीएम के डाइरेक्टर निशांत थपलियाल सहित अनेक गणमान्य नागरिक व साहित्यकार मौजूद थे।